प्रश्न-पत्र प्रारूप

हिंदी (केन्द्रिक)

कक्षा-बारहवीं

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघुत्तरात्मक	अपठित काव्यांश 5(5) अपठित गद्यांश 11(11)			पठन, भाव बोध व लेखन संबंधी
लघुत्तरात्मक	अपठित गद्यांश 4(2)		काव्य-अर्थग्रहण 8(4) काव्य-सौंदर्य बोध 6(3) काव्य-विषयवस्तु 6(2) गद्य-अर्थ ग्रहण 8(4) पूरक-विचार/संदेश 4(2)	अवबोध, पठन व लेखन अवबोध, पठन व लेखन अवबोध, पठन व लेखन अवबोध, पठन व लेखन अवबोध, पठन व लेखन

निबंधात्मक प्रश्न		निबंध 5(1) पत्र 5(1) फीचर 5(1) जनसंचार 5(1) संपादकीय 5(1)	पूरक-विषयवस्तु 5(1)	लेखन व अभिव्यक्ति लेखन व अभिव्यक्ति व लेखन लेखन व अभिव्यक्ति लेखन व अभिव्यक्ति लेखन व अभिव्यक्ति
बोधात्मक			गद्य-विषयवस्तु 12(4) पूरक-विषयवस्तु 6(2)	भावग्रहण, अवबोध व लेखन भावग्रहण, अवबोध व लेखन

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर व अंक कोष्ठक के बाहर हैं।

सी.बी.एस.ई. प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-1

हिंदी - केंद्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - 'क', 'ख', 'ग', 'घ'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
प्र.1	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** (1x5) 1. पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो। पुरुष क्या, पुरुषार्थ हुआ न जो, हृदय की सब दुर्बलता तजो। प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो, सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो? प्रगति के पथ में विचरो उठो, पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो। 2. न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है, न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है। समझ लो यह बात यथार्थ है - कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है। भुवन में सुख-शान्ति भरो, उठो। पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो। 3. न पुरुषार्थ बिना वह स्वर्ग है, न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है। न पुरुषार्थ बिना क्रियता कहीं, न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।	5

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	सफलता वर-तुल्य वरो, उठो, पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।	
	4. न जिसमें कुछ पौरुष हो यहाँ- सफलता वह पा सकता कहाँ? अपुरुषार्थ भयंकर पाप है, न उसमें यश है, न प्रताप है। न कृमि-कीट समान मरो, उठो, पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।	
	(क) प्रथम काव्यांश के माध्यम से कवि ने मनुष्य को क्या प्रेरणा दी है?	1
	(ख) मनुष्य पुरुषार्थ से क्या-क्या कर सकता है?	1
	(ग) 'सफलता वर-तुल्य वरो उठो' - पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करिए।	1
	(घ) अपुरुषार्थ भयंकर पाप है - कैसे?	1
	(ङ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
प्र.2	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	**15**
	1. आप एक ऐसे मुल्क में हैं, जहां करोड़ों युवा बसते हैं। इनमें से कई बेरोज़गार हैं, तो कई कोई छोटा-मोटा काम-धंधा कर रहे हैं। ये सब पैसा कमाने की ख्वाहिश रखते हैं, ताकि ये सभी अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी को चला सकें और भविष्य को बेहतर बना सकें। ऐसे लोगों से आप यह उम्मीद कैसे रख सकती हैं कि वे समाजसेवा के कार्यों में रुचि लेंगे?	
	2. यह उन कई मुश्किल सवालों में से एक है, जिनका सामना शिक्षाविद सूसन स्ट्रॉड को भारत में करना पड़ा। उन्होंने अमेरिका में राष्ट्रीय युवा सेवा संगठन अमेरिका की स्थापना की है।	
	3. सूसन का मकसद युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल एक रणनीति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए करना है। लेकिन क्या विकासशील देशों के युवा मुफ्त में वह काम करना चाहेंगे? क्या ये लोग अपनी पढ़ाई या कॅरियर को दरकिनार कर न्यूनतम वेतन पर ऐसी किसी मुहिम से जुड़ेंगे? प्रोत्साहन कहाँ है?	
	4. इसके जवाब में सुश्री स्ट्रॉड कहती हैं, "मैं सोचती हूँ कि ऐसे कुछ तरीके हैं, जिनसे भारत जैसे बेरोजगारी से जूझ रहे देशों में भी युवाओं की सेवाएँ ली जा सकती हैं।" वह पिछले साल नवंबर	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	में दिल्ली में हुए स्वयंसेवी प्रयासों के अंतरराष्ट्रीय संगठन के सम्मेलन में मानद अतिथि थीं। वह कहती हैं, ''युवाओं के लिए रोज़गार प्राप्ति में उनके पास नौकरी का कोई पूर्व अनुभव न होना एक सबसे बड़ी बाधा होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमने कई साल पहले दक्षिण अफ्रीका में ऐसे बेरोज़गार युवाओं के लिए कुछ कार्यक्रम शुरू किए जो राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय रहे। ये युवा स्कूलों से बाहर हो चुके थे और रोज़गार के मौके भी गँवा चुके थे। हमने इनके लिए कुछ कार्यक्रम तैयार किए। मिसाल के तौर पर हमने उन्हें अश्वेतों के इलाकों में कम कीमत के मकान बनाने के काम से जोड़ा। वहाँ इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे और जाना कि एक टीम के रूप में कैसे काम किया जाता है। इस तरह ये लोग एक हुनर में माहिर हुए और रोजगार पाने के दावेदार बने।''	
	5. नौकरियों से जुड़े बहुत से प्रशिक्षण कार्यक्रम अमूमन किसी खास कौशल के विकास पर केन्द्रित होते हैं, लेकिन सेवा संबंधी कार्यक्रम इनसे कुछ बढ़कर होते हैं। इनमें शामिल लोग, ज्यादा उपयोगी और पहल करने वाले नागरिक होते हैं। स्ट्रॉड के मुताबिक, इनकी यह खासियत इनमें समाज के प्रति एक जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता का अहसास भरती है। युवाओं के लिए चलाए जाने वाले सेवा संबंधी कार्यक्रमों के जरिए उन्हें उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है और इसके एवज में कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।	
	6. वह कहती हैं, ''जरा 1930 के दशक के मंदी के दौर के अपने देश को याद कीजिए। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने संरक्षण कार्यक्रम चलाए। उन्होंने देश के युवाओं को, खासकर बेरोजगारों को कई तरह के कामों से जोड़ दिया। इसका इन युवाओं और पूरे देश को जबर्दस्त फायदा हुआ।'' स्ट्रॉड बताती हैं, ''इन युवाओं को उनके काम के बदले में पैसा दिया जाता था, जिसका एक हिस्सा उन्हें अपने परिवारों को देना होता था। अगर आप अमेरिका के किसी राष्ट्रीय उद्यान में जाएंगे तो आपको पता चलेगा कि इन लोगों ने कितनी समृद्ध विरासत का निर्माण किया था। इन युवाओं ने अमेरिका के ज्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन किया और वहाँ लाखों पेड़ लगाए।''	
	7. अमेरिका में ऐसे ही प्रयासों की सबसे ताजा मिसाल है 'अमेरिका', इसके जरिए हर साल 75 हजार युवाओं को रोजगार दिया जाता है और इनमें से ज्यादातर बीस से तीस की आयुवर्ग के होते हैं। कई तो बस अभी हाईस्कूल से निकले ही होते हैं, तो कई स्कूल छोड़ चुके होते हैं और कई पी.एच.डी. भी होते हैं। सूसन बताती हैं कि आइडिया यह होता है कि ''लोग छात्रवृत्ति पाते हैं, जो न्यूनतम वेतन से कम होती है। इसके बदले ये युवा देश के सबसे विपन्न इलाकों में एक या दो साल तक कई तरह के काम करते हैं।''	
	8. स्ट्रॉड स्पष्ट करती हैं, ''इसमें दो राय नहीं कि इस पैसे से ये अमीर नहीं हो सकते, पर इतना जरूर है कि इससे इनका खर्चा आराम से चल जाता है। साल के आखिर में इन युवाओं को 4,725 डॉलर का एक वॉउचर दिया जाता है, जिसे ये सिर्फ शिक्षा या प्रशिक्षण की फीस चुकाने या कॉलेज का ऋण अदा करने के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं।'' इन युवाओं में बहुत से	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	मिसिसिपी और लुइसियाना में राहत का काम कर चुके हैं, जहां तूफान कैटरीना ने भारी तबाही मचाई थी।	
	9. स्ट्रॉड का मानना है कि स्वयंसेवी संगठन और व्यक्ति विशेष अपनी ऊर्जा और विचारों से विभिन्न योजनाओं को साकार कर सकते हैं, उन्हें कम करने और उसे फैलाने दीजिए। ''यदि आप बाकई ऐसा कुछ करना चाहते हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा युवाओं की जिंदगी प्रभावित हो तो इसके लिए आपको ज़्यादा से ज़्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।''	
	10. वह कहती हैं? ''भारत में भी युवाओं के लिए कई कार्यक्रम हैं। यहाँ एन. सी. सी. है और राष्ट्रीय सेवा योजना भी है, जिससे पूरे देश में पाँच हजार स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं। लेकिन वह सवाल करती हैं कि इस योजना से सिर्फ पाँच हजार युवा ही क्यों जुड़े हुए हैं, दस लाख क्यों नहीं?क्या इसे समाज की जरूरतों और रोज़गार से जोड़ा गया? युवाओं को इससे जोड़ने की मुहिम क्यों नहीं छेड़ी जाती? इस देश में गाँधीवादी परम्पराएँ हैं, दान और उदारता की भावना है, जिनके दम पर बड़े पैमाने पर सेवा संबंधी कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।''	
	(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
	(ख) भारत में करोड़ो युवाओं की कैसी स्थिति है?	1
	(ग) शिक्षाविद् सूसन स्ट्रॉड को भारत में क्या सामना करना पड़ा?	1
	(घ) सूसन युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल कैसे करती है?	1
	(ङ) अफ्रीका में बेरोजगार युवाओं के लिए किस तरह के कार्यक्रम तैयार किए गए?	1
	(च) युवाओं को उपयोगी परियोजनाओं के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है?	1
	(छ) अमेरिका में युवाओं ने राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन कैसे किया?	1
	(ज) 'अमेरिका' की भूमिका क्या है?	1
	(झ) ज्यादा युवाओं की जिंदगी को कैसे प्रभावित किया जा सकता है?	1
	(ञ) 'छात्रवृत्ति' तथा 'विकासशील' शब्दों के वाक्य बनाइए।	2
	(त) 'अमीर' और 'अतिथि' शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए।	2
	(थ) 'विपन्न' तथा 'न्यूनतम' शब्दों के विलोम लिखिए।	1
	(द) 'बेरोज़गारी' शब्द में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए।	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड-ख	**25**
प्र.3	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए -**	**5**
	(क) भारतीय सभ्यता पर हावी होती पश्चिमी सभ्यता।	
	(ख) नर हो न निराश करो मन को।	
	(ग) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य।	
	(घ) मीडिया की सामाजिक ज़िम्मेदारी।	
प्र.4	**दूरदर्शन के महानिदेशक को दूरदर्शन के कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए एक पत्र लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	अपने मुहल्ले के समीप स्थित ''बुद्धा पार्क'' की दुर्दशा की ओर निगमायुक्त का ध्यान आकर्षित करते हुए गौतम की ओर से पत्र लिखिए, जिसमें पार्क के समुचित रख-रखाव की व्यवस्था का आग्रह किया हो।	
प्र.5	**(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए -**	
	(क) पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य क्या है?	1
	(ख) स्तम्भ लेखन से क्या तात्पर्य है?	1
	(ग) 'डेड लाइन' क्या है?	1
	(घ) पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में क्या अन्तर है?	1
	(ङ) फीचर लेखन की भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?	1
	(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर आलेख लिखिए।	
	(1) लोकतंत्र देश की रक्षा कैसी की जा सकती है? युवा-पीढ़ी का इसमें क्या योगदान है? इन बिन्दुओं के अधाार पर एक आलेख तैयार कीजिए।	
	(2) दिल्ली के मास्टर प्लान की चर्चा आज चारों ओर है- इस विषय पर आलेख लिखिए।	
प्र.6	**किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों का फीचर आलेख लिखिए-**	**5**
	(क) यमुना जल की स्वच्छता के प्रयास हेतु अभियान	
	(ख) पाँव पसारता हुआ आतंकवाद	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड-ग	**55**
प्र.7	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -** मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ, फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ; कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ! मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ, मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ, जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते, मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!	**8**
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?	**1**
	(ख) 'जग जीवन का भार और फिर भी जीवन से प्यार' - यहाँ कवि ने जीवन के संदर्भ में यह विरोधी बात क्यों कही है?	**2**
	(ग) कवि स्नेह-सुरा का पान कैसे करता है?	**2½**
	(घ) 'जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते' से कवि का क्या अभिप्राय है?	**2½**
	अथवा बात सीधी थी पर एक बार भाषा के चक्कर में जरा टेढ़ी फँस गई। उसे पाने की कोशिश में भाषा को उलटा-पलटा तोड़ा-मरोड़ा घुमाया-फिराया कि बात या तो बने	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	या फिर भाषा से बाहर आए – लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ बात और भी पेचीदा होती चली गई। सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना मैं पेंच को खोलने के बजाए उसे बेतरह कसता चला जा रहा था क्योंकि इस करतब पर मुझे साफ़ सुनाई दे रही थी तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह।	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?	1
	(ख) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किन्तु कभी-कभी भाषा के चक्कर में '<u>सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।</u>' स्पष्ट कीजिए कैसे?	2½
	(ग) इन काव्यपंक्तियों के आधार पर बताइए कि हमें भाषा का प्रयोग कैसे करना चाहिए?	2½
	(घ) 'क्योंकि .... वाह वाह' – इसका भावार्थ स्पष्ट कीजिए।	2½
प्र.8	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**6**
	खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी। जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस, कहें एक एकन सों 'कहाँ जाई, कर करी बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत, साँकरे सबैं पै, राम! रावरें कृपा करी। दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु! दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।।	
	(क) किसान, व्यापारी, भिखारी और चाकर किस बात से परेशान हैं?	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ख) बेदहूँ पुरान कही .... कृपा करी' - इस पंक्ति का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। **(ग) कवि ने दरिद्रता को किसके समान बताया है और क्यों?** अथवा उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।। अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ़ अनुज उर लायऊ।। सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।। मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।। सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।। जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं बारा।। सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा। अस बिचारि जियैं जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।। जथा पंख बिन खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।। अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।। जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतू प्रिय भाइ गँवाई।। बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।। **(क) काव्यांश के भाव सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।** **(ख) इन पंक्तियों को पढ़कर राम-लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?** **(ग) अंतिम दो पंक्तियों को पढ़कर हमें क्या सीख मिलती है?**	
प्र.9	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (3+3)** (क) 'छोटा मेरा खेत' कविता में 'बीज गल गया नि:शेष' से क्या तात्पर्य है? (ख) फ़िराक की गजल में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है? (ग) 'बादल-राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।	**6**
प्र.10	**निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पद्‌र्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनाम धन्या गोपालिका की कन्या है - नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्‌धि भक्ति के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन	**8**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन-जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गद्‌गद हो उठी।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके रचनाकार कौन हैं?	**1**
	(ख) भक्तिन अपना नाम किसी को क्यों नहीं बताती थी?	**2**
	(ग) भक्तिन को हनुमान जी से स्पद्‌र्धा करने वाली किस अर्थ में कहा गया है?	**2½**
	(घ) महादेवी जी ने लक्ष्मी का नामकरण कैसे किया?	**2½**
	अथवा	
	उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है। और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं, स्त्रीत्व का प्रश्न है। स्त्री माया न जोड़े, तो क्या मैं जोड़ूँ? फिर भी सच सब है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है। मूल में एक और तत्त्व की महिमा सविशेष है। वह तत्त्व ही मनीबैग, अर्थात् पैसे की गरमी या एनर्जी। पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस-पास माल-टाल न जमा हो तो क्या वह खाक पावर है। पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए, पर माल-असबाब मकान-कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है। लेकिन नहीं। लोग संयमी भी होते हैं। वे फिजूल सामान को फिजूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्‌धिमान होते हैं। बुद्‌धि और संयमपूर्वक वह पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वह पैसे की पावर को इतना निश्चय समझते हैं, उसके प्रयोग की परीक्षा उन्हें दरकार नहीं है। बस खुद पैसे के जुड़ा होने पर उनका मन गर्व से भरा फूला रहता है।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?इसके रचनाकार कौन हैं?	**1**
	(ख) लेखक के अनुसार पत्नी की महिमा का क्या कारण है?	**2**
	(ग) आपके अनुसार स्त्री की आड़ में किस सच को छिपाया जा रहा है?	**2½**
	(घ) सामान्यतः संयमी व्यक्ति क्या करते हैं?	**2½**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
प्र.11	**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** (4x3)	12
	(क) यदि आप धर्मवीर भारती के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर क्या करते और क्यों? 'काले मेघा पानी दे' – पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ख) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?	
	(ग) चार्ली चैप्लिन की जिन्दगी ने उन्हें कैसा बना दिया? 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	(घ) लाहौर और अमृतसर के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया के साथ कैसा व्यवहार किया? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ङ) कालिदास ने शिरीष की कोमलता और द्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।	
प्र.12	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (3+3)	6
	(क) यशोधर बाबू की पत्नी मुख्यत: पुराने संस्कारों वाली थी, फिर किन कारणों से वह आधुनिक बन गई? 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ख) पाँचवी कक्षा में पास न होने के पश्चात लेखक को कैसा लगा? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए?	
	(ग) ऐन की डायरी के माध्यम से हमारा मन सभी युद्ध पीड़ितों के लिए कैसा अनुभव करता है? 'डायरी के पन्ने' कहानी के आधार पर बताइए।	
प्र.13	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (2+2)	4
	(क) सिंधु-सभ्यता में नगर-नियोजन से भी कहीं ज्यादा सौंदर्य-बोध के दर्शन होते हैं। 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में दिए तथ्यों के आधार पर जानकारी दीजिए।	
	(ख) 'जूझ' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या सीख दी है?	
	(ग) यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा?'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।	
प्र.14	**निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए -**	5
	(क) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन द्वारा वर्णित सेंधमारों वाली घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।	
	(ख) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु-सभ्यता में प्राप्त वस्तुओं का वर्णन कीजिए।	

सी.बी.एस.ई. प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-2

हिंदी - केन्द्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है - 'क', 'ख', 'ग', 'घ'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड-क	
प्र.1	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** (1x5)	5
	1. मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है। सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है।। जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है। जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है	
	2. नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं। सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है।। जिसके बड़े रसीले, फल कंद, नाज, मेवे। सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है।।	
	3. जिसके सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे। दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है।। मैदान, गिरि, वनों में, हरियालियाँ महकतीं। आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है।।	
	4. जिसकी अनंत वन से धरती भरी पड़ी है। संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है।। सब से प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी। जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है।।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(क) मनमोहिनी प्रकृति की गोद में कौन-सा देश बसा हुआ है और वहाँ कौन-सा सुख प्राप्त होता है?	1
	(ख) भारत की नदियों की क्या विशेषता है?	1
	(ग) भारत के फूलों का स्वरूप कैसा है?	1
	(घ) जगदीश का दुलारा देश भारत संसार का शिरोमणि कैसे है?	1
	(ङ) काव्यांश का सार्थक एवं उपयुक्त शीर्षक लिखिए।	1
प्र.2	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** भारत एक स्वतन्त्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। इस राष्ट्र में दक्षिण में स्थित कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में काश्मीर तक विस्तृत-भू-भाग है। यह भू-भाग अनेक राज्यों के मध्य बंटा हुआ है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी तथा भाषा-भाषी लोग रहते हैं। संपूर्ण राष्ट्र का एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिह्न तथा एक ही संविधान है। इन सभी से मिलकर राष्ट्र का रूप बनता है। देश जब अंग्रजों के अधीन था तब देश के प्रत्येक भाषा-भाषी तथा धर्म का अवलम्बन करने वाले ने देश को स्वतन्त्र कराने का प्रयत्न किया था। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आन्दोलन में भी भाग लिया था। इसी के परिणामस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त 1947 में स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्र देश का संविधान बना और वह 26 जनवरी 1950 में लागू हुआ। इस संविधान के लागू होने के पश्चात् हमारा देश गणतंत्र कहलाया। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस तथा 25 जनवरी को गणतंत्र दिवस हमें क्रमशः इसी दिन की याद दिलाते हैं। भारत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता में एकता है। यहाँ पर विभिन्न धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। इन सभी लोगों की बोली और भाषा भी भिन्न है। भौगोलिक दृष्टि से देखें तो यहाँ पर कहीं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं तो कहीं समतल मैदान। कहीं उपजाऊ भूमि है तो कहीं रेगिस्तान। दक्षिण में हिन्द महासागर लहलहा रहा है। प्राचीन काल में जब यातायात के साधन विकसित हुए थे तब यह विविधता स्पष्ट रूप से झलकती थी। आधुनिक काल में एक से एक द्रुतगामी यातायात के साधन बन चुके हैं जिससे देश की यह भौगोलिक सीमा सिकुड़ गई हैं। अब एक भाग से दूसरे भाग में हम शीघ्र ही पहुँच सकते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो सम्पूर्ण देश में एक अद्भुत समानता दिखाई पड़ती है। सारे देश में विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर है। इन सब में प्रायः एक-सी पूजा पद्धति चलती है। सभी धार्मिक लोगों में व्रत-त्योहारों को मानने की एक-सी प्रवृत्ति है। वेद, रामायण और महाभारत आदि ग्रंथों पर धार्मिक अनुष्ठान धर्म आया तो उसके भी अनुयायी सारे देश में विपुल साहित्य की रचना की गई। जब इस्लाम धर्म आया तो उसके भी अनुयायी सारे देश में फैल गये। इसी प्रकार ईसाई धर्मावलम्बी सम्पूर्ण देश में पाये जाते हैं। इससे सारा देश वस्तुतः एक ही सूत्र में बंधा हुआ है। भारतीय संस्कृति में ढले प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान है। इस पहचान के कारण इस देश को लोग एक दूसरे से	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	अपना भिन्न अस्तित्व रखते हैं। विभिन्न प्रकार के रहन–सहन तथा पहनावे के होने पर भी सारा देश वस्तुतः एक ही है। यह सांस्कृतिक एकता ही वस्तुतः इस देश की वह शक्ति है जिससे इतना बड़ा देश एक सूत्र में बंधा हुआ है। विविधता में एकता की इस विशेषता पर सभी भारतीय गर्व करते हैं तथा इस पर संसार दंग है। राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनेक प्रयत्न किए गए हैं। अनेक महापुरुषों तथा नेताओं ने इस प्रकार के अवसरों पर जनता से आग्रह किया और जनता में एक प्रकार की जागृति भी आई किन्तु स्थायी न रह सकी। महात्मा गांधी का जीवन राष्ट्रीय एकता से ओत–प्रोत था। उनका समूचा जीवन राष्ट्रीय एकता का ज्वलन्त उदाहरण था। महात्मा गांधी तो कभी–कभी एक मास का उपवास भी करते थे। ''हिन्दू–मुस्लिम भाई–भाई'' के नारे लगाए जाते थे। अन्त में महात्मा जी के बलिदान का एकमात्र आधार 'राष्ट्रीय एकता' ही था। इस दिशा में श्री नेहरू के प्रयत्नों को भी भुलाया नहीं जा सकता। यह बात दूसरी है कि स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। शनैः शनैः भावात्मक एकता का विकास हुआ। इस समय पृथकतावादी विचारधारा पनप रही है। हमें ऐसी विचारधारा को समाप्त करना चाहिए। समस्त राज्य संघ गणराज्य भारत के अभिन्न अंग है। समस्त महामानवों, नेताओं, राजनीति के पंडितों तथा महान साहित्यकारों को जनता में भारतीयता कूट–कूट कर भरनी चाहिए। यह प्रयत्न निस्सन्देह राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा। प्रत्येक भारतीय को संकीर्ण विचारधारा का परित्याग कर व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। तभी हमारी राष्ट्रीय एकता अक्षुण्ण बनी रह सकती है, जो आज की एक महत्वपूर्ण अपेक्षा है।	
	(क) राष्ट्र का निर्माण कौन–सी चीजें मिल कर करती हैं?	1
	(ख) किसके परिणामस्वरूप देश 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्र हुआ था?	1
	(ग) भारत की उल्लेखनीय विशेषता क्या है?	1
	(घ) देश की भौगोलिक सीमा किस प्रकार सिकुड़ गई प्रतीत होती है?	1
	(ङ) सांस्कृतिक दृष्टि से देश में क्या समानता दिखाई पड़ती है?	2
	(च) भारत में अनेकता में एकता कैसे है?	2
	(छ) महात्मा गांधी का जीवन कैसा था?	1
	(ज) कौन–सा प्रयत्न राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा?	1
	(झ) हमारी राष्ट्रीय एकता कैसे अक्षुण्ण बनी रह सकती है?	1
	(ञ) गद्यांश में से 'ता' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।	1
	(त) 'सांस्कृतिक' शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।	1
	(थ) विलोम शब्द लिखिए – 'आधुनिक', 'अपेक्षा'।	1
	(द) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड-ख	**25**
प्र.3	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए -**	**5**
	(क) अनेकता में एकता-भारत की विशेषता।	
	(ख) मनोरंजन के आधुनिक साधन।	
	(ग) विज्ञापन कला के लाभ।	
	(घ) हमारे त्योहार-हमारा गौरव	
प्र.4	**किसी दैनिक समाचार-पत्र के प्रधान संपादक को सुमन की ओर से पत्र लिखिए, जिसमें पुस्तकों के मूल्यों में निरंतर होने वाली वृद्धि को लेकर चिंता प्रकट की गई हो।**	**5**
	अथवा	
	अपने नगर के महापौर को पत्र लिखकर नगर में नियमित एवं अपर्याप्त जल-वितरण से होने वाली असुविधाओं के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।	
प्र.5	**(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए -**	
	(क) उल्टा पिरामिड शैली क्या होती है?	1
	(ख) पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' किसे कहते हैं?	1
	(ग) पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?	1
	(घ) फीचर लेखन और समाचार में क्या अन्तर है?	1
	(ङ) छह ककार कौन से हैं?	1
	(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर रिपोर्ट तैयार कीजिए	**5**
	(1) 'हमें झुग्गीवसियों के साथ एक कार्यशाला में भाग एवं उनकी शोचनीय दशा देखनें का अवसर मिला'। इस पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।	
	(2) 'हर साल बच्चों की हत्या और अपहरण की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं' अपने विद्यालय की पत्रिका केलिए शोध के उपरांत एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।	
प्र.6	**किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों का फीचर आलेख लिखिए -**	**5**
	(क) युवा पीढ़ी में घटते संस्कार	
	(ख) दूरदर्शन - कल और आज	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड-ग	**55**
प्र.7	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**	**8**
	मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ, मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ, है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ! मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ, सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ, जग भव-सागर तरने को नाव बनाए, मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई है और इसके कवि कौन हैं?	**1**
	(ख) 'निज उर के उद्‌गार व उपहार' - से कवि का क्या तात्पर्य है?स्पष्ट कीजिए।	**2**
	(ग) कवि को संसार अच्छा क्यों नहीं लगता है?	**2½**
	(घ) संसार में कष्टों को सहकर भी खुशी का माहौल कैसे बनाया जा सकता है?	**2½**
	अथवा	
	कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने बाहर भीतर इस घर, उस घर कविता के पंख लगा उड़ने के माने चिड़िया क्या जाने? कविता एक खिलना है फूलों के बहाने कविता का खिलना भला फूल क्या जाने! बाहर भीतर इस घर, उस घर बिना मुरझाए महकने के माने	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	फूल क्या जाने? कविता एक खेल है बच्चों के बहाने बाहर भीतर यह घर, वह घर सब घर एक कर देने के माने बच्चा ही जाने।	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?	1
	(ख) इन काव्यपंक्तियों में 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध हो सकता है?	2
	(ग) कवि 'कविता' और 'बच्चे' को समानांतर क्यों माना है?	2½
	(घ) कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?	2½
प्र.8	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -(2x3)**	6
	किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट, चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी। पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि, अटत गहन-गन अहन अखेटकी।। ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी। 'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें, आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।	
	(क) इन काव्यपंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।	2
	(ख) पेट की आग को कैसे शाँत किया जा सकता है?	2
	(ग) 'पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि' - इस पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?	2
	अथवा	
	हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।। तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।। कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।। यह बृतांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ।। ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।। जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि बैसा।। कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई।। कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी।। तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे।। दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी।। अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा।। (क) काव्यांश का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। (ख) इन पंक्तियों के आधार पर हनुमान की विशेषताएँ बताइए। (ग) रावण ने अपने भाई कुंभकरण को क्यों जगाया?इससे उसके बारे में क्या पता चलता है?	
प्र.9	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** (3+3) (क) **'किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक है।'** – **'पतंग'** कविता के आधार पर स्पष्ट कीजए। (ख) **'कैमरे में बंद अपाहिज'** शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए। (ग) **'छोटा मेरा खेत'** कविता में **'कागज़ का एक पन्ना'** और **'खेत'** में किस आधार पर समानता दर्शायी गई है?	6
प्र.10	**निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –** पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने–पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना–उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को	8

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंक कर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके रचनाकार कौन है?	1
	(ख) भक्तिन को उसके पिता की बीमारी का समाचार क्यों नहीं दिया गया?	2
	(ग) लछमिन (भक्तिन) की सास ने उससे पिता की मृत्यु का समाचार क्यों छिपाया?	2½
	(घ) पिता के घर पहुँचकर भी लछमिन बिना पानी पिए उलटे पैरों क्यों लौट गई?	2½
	अथवा	
	मैंने मन में कहा, ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज़ है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है, आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है ओह! कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश के लेखक कौन हैं? इसे किस पाठ से लिया गया है?	1
	(ख) गद्यांश के आरंभ में कौन, किससे और क्या कह रहा है?	2
	(ग) चाह का मतलब अभाव क्यों कहा गया है?	2½
	(घ) बाज़ार के चौक के बारे में क्या बताया गया है?	2½
प्र.11	**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (3x4)**	12
	(क) 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए।	
	(ख) 'ढोल मे तो जैसे पहलवान की जान बसी थी।' - 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर इसे सिद्ध कीजिए।	
	(ग) चार्ली चैप्लिन ने दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को कैसे तोड़ा है?- 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर बताइए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(घ) सिख बीबी के प्रति सफिया के आकर्षण का क्या कारण था? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ङ) शिरीष तरु के अवधूत रूप के कारण लेखक को किस महात्मा की याद आती है और क्यों? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।	
प्र.12	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** (2x3)	6
	(क) यशोधर बाबू का अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार था? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।	
	(ख) किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।	
	(ग) ऐन की डायरी से उसकी किशोरावस्था के बारे में क्या पता चलाता है? 'डायरी के पन्ने' कहानी के आधार पर लिखिए।	
प्र.13	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (2+2)	4
	(क) सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	(ख) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?	
	(ग) लेखक का पाठशाला में विश्वास कैसे बढ़ा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।	
प्र.14	**निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए -**	5
	(क) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।	
	(ख) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि ऐन फ्रैंक बहुत प्रतिभाशाली तथा परिपक्व थी?	

अंक योजना प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-1

हिंदी - केंद्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है - 'क', 'ख', 'ग', 'घ'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

प्र.सं.		उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
		खंड-क	
प्र.1	(क)	प्रथम काव्यांश के माध्यम से कवि ने मनुष्य को यह प्रेरणा दी है कि वह अपनी समस्त शक्तियाँ एकत्रित करके परिश्रम करे क्योंकि परिश्रम करने से ही जीवन में प्रगति संभव है।	1
	(ख)	पुरुषार्थ से मनुष्य स्वार्थ तथा परमार्थ कर सकता है तथा विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना कर सकता है।	1
	(ग)	इस पंक्ति का अर्थ है कि मनुष्य कर्म करते हुए वरदान के समान सफलता को धारण करे, अर्थात् जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम अनिवार्य है।	1
	(घ)	अपुरुषार्थ अर्थात् पुरुषार्थ न करना, उद्‍यम न करना। वास्तव में अपुरुषार्थ मनुष्य के लिए एक पाप के समान है। क्योंकि अपुरुषार्थ में न तो यश है, न प्रताप है। अर्थात् उद्‍यमहीन मनुष्य को जीवन में यश और वीरत्व दोनों की ही प्राप्ति नहीं होती।	1
	(ङ)	शीर्षक - पुरुष हो पुरुषार्थ करो/पुरुषार्थ का महत्व।	1
प्र.2	(क)	शीर्षक-बेरोजगारों के लिए रोजगार/रोजगार के लिए सूसन की भूमिका।	1
	(ख)	भारत में करोड़ो युवाओं में से कई तो बेरोजगार हैं तो कई कोई छोटा-मोटा धंधा कर रहे हैं। ये सभी पैसा कमाने की इच्छा रखते हैं ताकि, भविष्य में जी सके।	1
	(ग)	शिक्षाविद् सूसर स्ट्रॉड को भारत में कई मुश्किल सवालों का सामना करना पड़ा।	1
	(घ)	सूसन युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल एक रणनीति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए करती है।	1
	(ङ)	अफ्रीका में बेरोजगार युवाओं को अश्वेतों के इलाके में कम कीमत के मकान बनाने के कार्यक्रम से जोड़ा गया। इससे इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे तथा टीम के रूप में काम करना सीखा।	1
	(च)	युवाओं को सेवा संबंधी कार्यक्रमों के माध्यम से उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है तथा इसके एवज में इन्हें कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(छ) अमेरिका में युवाओं ने ज्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन लाखों की संख्या में पेड़ लगा कर किया।	1
	(ज) 'अमेरिका' के जरिए हर साल 75 हजार युवाओं को रोजगार दिया जाता है। इन युवाओं की आयु बीस से तीस साल तक होती हैं।	1
	(झ) ज्यादा युवाओं की जिन्दगी को प्रभावित करने के लिए ज्यादा से ज्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।	1
	(ञ) छात्रवृत्ति – कक्षा दसवीं से प्रथम आने पर मेरे छोटे भाई को दिल्ली सरकार ने छात्रवृत्ति दी।	2
	विकासशील – विकासशील देश भी आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हैं।	
	(त) पर्यायवाची (दो–दो) –	2
	अमीर – धनी, धनाढ्य	
	अतिथि – मेहमान, आगन्तुक	
	(थ) विलोम शब्द –	1
	विपन्न – सम्पन्न	
	न्यूनतम – अधिकतम	
	(द) बेरोजगारी	1
	उपसर्ग – बे	
	प्रत्यय – ई	
	खंड-ख	
प्र.3	किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित है –	**5**
	(क) भूमिका और उपसंहार	2
	(ख) विषय वस्तु (कम से कम तीन प्रमुख बिन्दुओं पर विमर्श)	2
	(ग) भाषा की शुद्धता एवं समग्र भाव	1
प्र.4	पत्र–लेखन किसी एक विषय पर अपेक्षित है –	**5**
	(क) प्रारंभ एवं अंत की औपचारिकताएँ	2
	(ख) प्रश्नानुरूप विषय–वस्तु	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ग) भाषा की शुद्धता और समग्र भाव	1
प्र.5	**(अ) सभी के संक्षिप्त उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से हैं जिसमें फैशन, अमीरों की बड़ी-बड़ी पार्टियों, महफिलों तथ लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह सामान्य तथा समाचार पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती है।	1
	(ख) महत्वपूर्ण, लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला को स्तंभ लेखन कहा जाता है। इसमें लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं।	1
	(ग) समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए पहुँचने की आखिरी समय-सीमा को डेड लाइन कहा जाता है।	1
	(घ) पत्रकारीय लेखन में पत्रकार पाठकों, दर्शकों व श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपें का इस्तेमाल करते हैं, जबकि साहित्यिक-सृजनात्मक लेखन में चिंतन के जरिए नई रचना का उद्भव होता है।	1
	(ङ) फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक व मन को छूने वाली होनी चाहिए।	1
	(आ) (1) विषय पर सभ्यक चिंतन (2) भाषा, सहज, सरल व रोचक (3) उपसंहार रूपी समाधान।	5
प्र.6	**फीचर-लेखन**	**5**
	(क) प्रारम्भ और समापन	2
	(ख) प्रभावी प्रस्तुति	2
	(ग) उपयुक्त भाषा	1
	खंड-ग	
प्र.7	**कोई एक पद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं-**	
	(क) कवि - हरिवंश राय बच्चन कविता - आत्म परिचय	1
	(ख) क्योंकि दोनो (कवि और संसार) अलग-अलग प्रवृत्तियों के हैं। कवि को संसार अपूर्ण लगता है और वह उसके अवसाद, दुख-दर्द में भी खुशी तलाश लेता है।	2

प्र.सं.		उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ग)	कवि प्रेम की मादकता, उसके पागलपन को हर पल महसूस करता रहता है – मानो किसी ने उसके जीवन को प्रेम-स्पर्श देकर उसके मन की झंकृत कर दिया हो।	**2½**
	(घ)	इससे यह अभिप्राय है कि संसार उन्हे ही आदर-सम्मान देता है जो संसार का गुणगान करते हैं, उनका सम्मान नही करता जो संसार की इच्छा से नहीं अपितु अपनी इच्छा से गीत गाते हैं।	**2½**
		अथवा	
	(क)	कवि – श्री कुवँर नारायण	1
		कविता – बात सीधी थी पर	
	(ख)	भाषा और बात में परस्पर संबंध है कई बार भाषा में का शब्दजाल कवि अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिए बुनता है, तारीफ़ पाने के लिए बुनता है। फिर इसी जाल में फँसकर बात अपना अर्थ और स्वरूप खोकर टेढ़ी हो जाती है।	**2½**
	(ग)	जिस बात को हम सीधी सरल भाषा में बोलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं, उसके लिए पेचीदा शब्द जाल नहीं बुनना चाहिए। भाषा को सहज रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए।	**2**
	(घ)	अर्थात् कवि ने भाषा को जितना बनावटी ढंग से और उसे लाग-लपेट करने वाले शब्दों के साथ प्रयोग किया, उस पर उसे उतनी ही अधिक प्रशंसा मिल रही थी।	**2½**
प्र.8		**किसी एक काव्यांश के उत्तर अपेक्षित है-**	
	(क)	किसान को खेती के अवसर नहीं मिलते, व्यापारी के पास व्यापार की कमी है, भिखारी को भीख नही मिलती और नौकर को नौकरी नही मिलती।	2
	(ख)	वेद-पुराण में भी यही लिखा है कि भगवान श्री राम की कृपा दृष्टि पड़ने पर ही दरिद्रता दूर हो सकती है।	2
	(ग)	दरिद्रता को दस मुख वाले रावण के समान बताया है क्योंकि वह भी रावण की तरह समाज के हर वर्ग को प्रभावित कर अपना अत्याचार चक्र चला रही है।	2
		अथवा	
	(क)	विष्णु भगवान के अवतार भगवान श्री राम का मनुष्य के समान व्याकुल होना, आज के युग में जब लोग अपने भाइयों से झगड़ते रहते हैं, तो राम, लक्ष्मण और भरत का यह परस्पर अगाध प्रेम हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।	
	(ख)	दोनो भाइयों में परस्पर अगाध प्रेम था। श्री राम अनुज से बहुत लगाव रखते थे तथा दोनों में पिता-पुत्र का सा संबंध था। वहीं लक्ष्मण श्री राम का बहुत सम्मान करते थे।	
	(ग)	भगवान श्री राम के अनुसार संसार के सब सुख भाई पर न्यौछावर किए जा सकते हैं। भाई	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	के अभाव में जीवन व्यर्थ है और भाई जैसा कोई हो ही नहीं सकता। आज के युग में यह सीख अनेक सामाजिक कष्टों से मुक्त करवा सकती है।	
प्र.9	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) कविता की खेती में कवि ने कागज़नुमा खेत पर आई विचारों की आँधी का उल्लेख किया है। इसी के परिणामस्वरूप वह क्षण आया जब लेखन आरंभ हुआ। कल्पनाओं के प्रभाव से वह क्षण गौण हो गया और कविता का जन्म हुआ, जैसे खेत में रोपा हुआ बीज लुप्त होकर अंकुर और पौधे को जन्म देता है। इसके अतिरिक्त नवीन सृजन के लिए सृजनकर्ता को त्याग करना पड़ता है। कभी-कभी तो यह स्थिति भी होती है कि बलिदान के पश्चात नवनिर्माण आकार पाता है।	3
	(ख) फ़िराक की गज़ल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।	3
	(ग) 'बादल राग' शीर्षक पढ़ते ही हमारे मन-मस्तिष्क में बादलों की गर्जन सुनाई देने लगती है। कवि ने बादलों के गर्जन-तर्जन को क्रांति अर्थात् रणभेरी कहा है। बादल के आगमन से प्राणियों और परिवेश में जो कोलाहल सुनाई देता है, जो परिवर्तन आते हैं, उन्हे वर्णित किया है। वर्णन इतना सशक्त और नादमय है कि कविता में आरंभ से अंत तक बादल का स्वर सुनाई देता रहता है। इन सभी विशेषताओं के कारण 'बादल राग' शीर्षक ही सबसे उपयुक्त है।	
प्र.10	**किसी एक गद्यांश के उत्तर अपेक्षित है-**	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है। इसे 'महादेवी वर्मा' ने लिखा है।	1
	(ख) भक्तिन का असली नाम लछमिन था। वह इस नाम को सबसे छिपाती थी, क्योंकि इस समृद्धि -सूचक नाम जैसा उसके जीवन में कुछ था ही नहीं। अत: उसे नाम पर शर्म महसूस होती होगी। इसीलिए वह किसी को अपना नाम नहीं बताती थी।	2
	(ग) हनुमान जी को सेवक-धर्म को सर्वाधिक निष्ठा से निभानेवाला रामभक्त माना जाता है। महादेवी जी भक्तिन के सेवा भाव से इतनी प्रभावित थी कि उन्होंने इसी सद्गुण के कारण भक्तिन को हनुमान जी के समकक्ष माना।	2½
	(घ) लक्ष्मी ने ईमानदारी से अपना नाम बताने और इस नाम को छिपाने की बात स्पष्ट रूप से बता दी थी। अत: उसकी कंठी-माला देखकर लेखिका ने उसे 'भक्तिन' नाम दे डाला।	2½

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	अथवा	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश 'बाज़ार दर्शन' पाठ से लिया गया है, इसकी रचना जैनेंद्र जी ने की है।	1
	(ख) आदिकाल से ही स्त्री को महत्त्वपूर्ण माना गया है। स्त्री (पत्नी) ही महिमा है और इस महिमा का प्रशंसक है उसका पति। वही इसकी प्रमुखता को प्रमाणित कर रहा है।	2
	(ग) स्त्री की आड़ में यह सच छिपाया जा रहा है कि इन महाशय के पास भरा हुआ मनीबैग है, पैसे की गर्मी है, ये इस गर्मी से अपनी एनर्जी साबित करने के लिए स्त्री को फिजूल खर्च करने देते हैं।	2½
	(घ) संयमी लोग 'पर्चेज़िंग पावर' के नाम अपनी शान नहीं दिखाते। वे धन को जोड़कर बुद्धि और संयम से अपनी पावर बनाते हैं। प्रसन्न रहते हैं और फ़िज़ूलखर्च नहीं करते।	2½
प्र.11	**कोई चार उत्तर अपेक्षित है –**	
	(क) यदि हम लेखक के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर वही करते जो लेखक ने किया, क्योंकि तर्क करने से तो जीजी शायद ही कुछ समझ पातीं, उनका दिल दुखता और हमारे प्रति उनका सद्भाव भी घट जाता। लेखक की भाँति हम भी जीजी के प्यार और सद्भाव को खोना नहीं चाहते। यही कारण है कि बहुत-सी बेतुकी परंपराएँ हमारे देश को जकड़े हुए हैं।	3
	(ख) ढोल को पहलवान ने अपना गुरु माना और एकलव्य की भांति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजा कर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँववालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया। और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन साथी ही था।	3
	(ग) चार्ली एक परित्यक्ता, दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री के बेटे थे। उन्होने भयंकर गरीबी और माँ के पागलपन से संघर्ष करना सीखा। साम्राज्य, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद तथा सामंतशाही से मगरूर एक समाज का तिरस्कार सहन किया। इसी कारण मासूम चैप्लिन को जो जीवन मूल्य मिले, वे करोड़पति हो जाने के बाद भी अंत तक उनमें रहे। इन परिस्थितियों ने चैप्लिन में भीड़ का वह बच्च सदा जीवित रखा, जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना ही नंगा है, जितना मैं हूँ और हँस देता है। यही वह कलाकार है, जिसने विषम परिस्थितियों में भी हिम्मत से काम लिया।	3
	(घ) दोनों जगह के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया और उसकी नमक रूपी सद्भावना का सम्मान किया। केवल सम्मान नहीं, उसे यह भी जानकारी मिली कि उनमें से एक देहली को अपना	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	वतन मानते और दूसरे ढाका को अपना वतन कहते है। उन दोनों ने सफ़िया के प्रति पूरा सद्‌भाव दिखाया, कानून का उल्लंघन करके भी उसे नमक ले जाने दिया। अमृतसर वाले सुनील दास गुप्त तो उसका थैला उठाकर चले और उसके पुल पार करने तक वहीं पर खड़े रहे। उन अधिकारियों ने यह साबित कर दिया कि कोई भी कानून या सरहद प्रेम से ऊपर नहीं है।	
	(ङ) कालिदास और संस्कृत साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का कथन कि ''पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणाम्'' – शिरीष पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं। लेकिन इससे हजारी प्रसाद द्‌विवेदी सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि इसे कोमल मानना भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते है कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल–पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन पर जब सारी वनस्थली पुष्प–पत्र से मर्मरित होती रहती है, तब भी शिरिष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।	
प्र.12	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं –**	
	(क) यद्यपि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, पर अब बच्चों का पक्ष लेने की मातृ सुलभ मजबूरी ने उन्हें आधुनिक बना दिया है। वे बच्चों के साथ खुशी से समय बिताना चाहती हैं। यशोधर बाबू का समय ता दफ़्तर में कट जाता है, लेकिन उनकी पत्नी क्या करे? अतः बच्चों का साथ देना ही उन्हें अच्छा लगता है। इसके अतिरिक्त उनके मन में इस बात का भी बड़ा मलाल था कि जब वे शादी होकर आई थीं, तो संयुक्त परिवार में उन पर बहुत कुछ थोपा गया और उनके पति यशोधर बाबू ने कभी भी उनका पक्ष नहीं लिया। युवावस्था में ही उन्हें बुढ़िया बना दिया गया। अब तो कम–से–कम बच्चों के साथ रहकर कुछ मन की कर लें।	3
	(ख) जो लड़के चौथी पास करके कक्षा में आए, लेखक उनमें से गली के दो लड़कों के सिवाए और किसी को जानता तक नहीं था। जिन लड़कों को वह कम अक्ल और अपने से छोटा समझता था, उन्हीं के साथ अब उसे बैठना पड़ रहा था। वह अपनी कक्षा में पुराना विद्‌यार्थी होकर भी अजनबी बनकर रह गया। पुराने सहपाठी तो उसे सब तरह से जानते समझते थेः मगर नए लड़कों ने तो उसकी धोती, उसका गमछा, उसका थैला आदि सब चीज़ों का मज़ाक उड़ाना आरंभ कर दिया। उसके मन में यह दुख भी था कि इतनी कोशिश करके पढ़ने का अवसर मिला और वह पास नहीं हो सका। इससे उसके आत्मविश्वास में भी कमी आ गई।	3
	(ग) ऐन की डायरी में युद्‌ध पीड़ितों की ऐसी सूक्ष्म पीड़ाओं का सच्चा वर्णन है जैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। इससे पीड़ितों के प्रति हमारा मन करुणा और दया से भर जाता है। मन में हिंसा और युद्‌ध के प्रति घृणा का भाव आता है। हम सोचते हैं कि युद्‌ध, विजेता और	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	पराजित पक्ष दोनों के लिए ही आघात और पीड़ा देनेवाला होता है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी नागरिकों के नन्हें बच्चों को कितना भटकना पड़ता है, यह पीड़ा की पराकाष्ठा है। यदि ऐन के साथ ऐसा बुरा व्यवहार न हुआ होता तो उसकी इस तरह अकाल मृत्यु न हुई होती। ऐन के परिवार के साथ जैसा हुआ वैसा न जाने कितने लोगों के साथ हुआ होगा। मन करता है कि वे लोग जो युद्ध का कारण बनते हैं वे ऐन की डायरी पढ़कर उसे अपने लिए अनुभव करके देखें।	
प्र.13	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) कहा जा सकता है कि खुदाई में प्राप्त धातु और पत्थर की मूर्तियों, मृद-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुंदर मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास और आभूषण आदि उस समय के लोगों के सौंदर्य-बोध के परिचायक हैं। इस सबसे कहीं ज्यादा सौंदर्य-बोध कराती हैं वहाँ की सुघड़ लिपि। यदि गहराई से सोचें तो वहाँ की प्रत्येक सुघड़ योजना भी तो सौंदर्य-बोध का ही एक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। ढकी हुई पक्की नालियाँ बनाने के पीछे गंदगी से बचाव का जो उद्देश्य था वह भी तो मूल रूप से स्वच्छता और सौंदर्य का ही बोध कराता है। आवास की सुंदर व्यवस्था हो या अन्न भंडारण, सभी के पीछे अप्रत्यक्ष रूप से सौंदर्य-बोध काम कर रहा है। अतः यह स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता में किसी भी अन्य व्यवस्था से ऊपर सौंदर्य-बोध ही था।	2
	(ख) हमारा लेखक प्रतिभा संपन्न था, मगर ढोर चराने और खेत में पानी देने तथा उपले बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा रहा था। पढ़ने की इच्छा भीतर-ही-भीतर कुलबुलाती रहती थी। सभी उसे छोरे कहकर बुलाते। वह पशुओं का-सा जीवन जी रहा था। जब पढ़ने का अवसर मिला, तो उसने कविता पाठ में से सबको पीछे छोड़ दिया। गणित के सवाल हल करने में भी उसने पूरी कक्षा को पीछे छोड़ दिया। सभी अध्यापक उसे आनंद कहकर पुकारते थे, उसे मानो अपनी स्वयं की पहचान मिल गई। उसके लगा उसे पंख निकल आए हैं। वह वह बहुत ही खुश रहने लगा। मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान होता है। इस कहानी के कहानी के माध्यम से लेखक ने यही सीख दी है।	2
	(ग) इस पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार बड़ा अजीब लगा। उन्हें पार्टी इंप्रापर लगी, क्योंकि उनके अनुसार ये सब अंग्रेज़ों के चोचले थे। अपनी पत्नी और पुत्री की ड्रेस इंप्रापर लगी, व्हिस्की इंप्रापर लगी, केक भी नहीं खाया, क्योंकि उसमें अंडा होता है। लड्डू भी नहीं खाया, क्योंकि शाम की पूजा नहीं की थी। पूजा में जाकर बैठ गए ताकि मेहमान चले जाएँ। उनका ऐसा व्यवहार बड़ा ही इंप्रापर लग रहा था। यदि वे कहीं किसी जगह पर भी ज़रा-सा समझौता कर लेते, तो शायद इतना बुरा न लगता।	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.14	**कोई एक उत्तर अपेक्षित है-**	
	(क) ऐन ने अपनी डायरी में अनेक कष्ट देने वाली बातों में सबसे प्रमुख अज्ञातवास को ही कहा है। किसी बस्ती में छिपकर रहना बड़ा ही कठिन काम है। 11 अप्रैल 1944 की जो घटना ऐन ने लिखी है उससे पता चलता है कि वे लोग अनेक कष्टदायी स्थितियों के साथ-साथ सेंधमारों से भी संघर्ष करते थे। उस दिन रात साढ़े नौ बजे पीटर ने जिस प्रकार ऐन के पिता को बाहर बुलाया उससे ऐन समझ गई कि दाल में कुछ काला है। सेंधमारों ने अपना काम शुरू कर दिया था। इसलिए ऐन के पिता, मिस्टर वान दान और पीटर लपककर नीचे पहुँचे। ऐन, मार्गोट उनकी माँ और मिसेज वान डी ऊपर डरे-सहमे से इंतज़ार करते रहे। एक ज़ोर के धमाके की आवाज़ से इन लोगों के होश उड़ गए। नीचे गोदाम में सन्नाटा था और पुरुष लोग वहीं सेंधमारों के साथ संघर्ष कर रहे थे। डर से काँपने पर भी ये लोग शांत बने रहे। तकरीबन 15 मिनट बाद ऐन के पिता सहमे हुए ऊपर आए और इन लोगों से बत्तियाँ बंद करके ऊपर छत पर चले जाने को कहा; अब ये लोग डरने की प्रतिक्रिया जताने की स्थिति में भी नहीं थे। सीढ़ियों के बीच वाले दरवाज़े पर ताला जड़ दिया गया। बुककेस बंद कर दिया गया, नाइट लैंप पर स्वेटर डाल दिया गया। पीटर अभी सीढ़ियों पर ही था कि ज़ोर के दो धमाके सुनाई दिए। उसने नीचे जाकर देखा कि गोदाम की तरफ का आधा भाग गायब था। वह लपककर होम गार्ड को चौकन्ना करने भागा। मिस्टर वान ने समझदारी दिखाते हुए शोर मचाया 'पुलिस! पुलिस' यह सुनकर सेंधमार भाग गए और गोदाम के फट्टे फिर से लगा दिए गए। लेकिन वे कुछ ही मिनट में लौट आए और फिर से तोड़ा-फोड़ी शुरू हो गई। उस डरावनी रात में बड़ी मुश्किल से पुरुषों ने संघर्ष करके जान बचाई।	5
	(ख) सिंधु-सभ्यता की खुदाई में मिली अनेक वस्तुओं को अजायबघर में रखा गया है। स्थानीय अजायबघर में बहुत कम वस्तुओं को रखा गया है। अधिकांश महत्त्वपूर्ण चीज़ें कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में हैं। यों अकेले मोहन जादड़ों की खुदाई में निकली पंजीकृत चीज़ों की संख्या पचास हज़ार से ज़्यादा है, जिनमें से प्रत्येक सिंधु सभ्यता की उत्कृष्टता की मिसाल है। काले भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप-तौल के पत्थर, ताँबे का आईना, मिट्टी की बैलगाड़ी, अन्य कई प्रकार के खिलौने, दो पाटनवाली चक्की, कंघी मिट्टी के कंगन, रंग-बिरंगे पत्थर के हार और पत्थर के औज़ार। अजायबघर में तैनात चौकीदार ने बताया कि पहले कुछ सोने के आभूषण भी थे जो चोरी हो गए। प्रत्येक वस्तु देखकर दर्शक हैरत में पड़ जाते हैं। काले पड़ गए गेहूँ, ताँबे और काँसे के बरतन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद भांड, अनेक लिपि चिह्न साक्षर सभ्यता के प्रमाण हैं। कुएँ और चाक पर बने बरतनों के अतिरिक्त सब कुछ चौकोर है- बस्तियाँ, कुंड, चौपड़, ठप्पेदार मोहरें, गोटियाँ, तौलने के बाट आदि।	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	सोने की सुइयाँ संभवत: कशीदेकारी के काम आती होगी। सबसे प्रसिद्ध दाढ़ीवाले नरेश की मूर्ति जिसके बदन पर आकर्षक गुलकारीवाला दुशाला भी है, कुछ हाथी दाँत और ताँबे की सुइयाँ भी मिली हैं। खुदाई में प्राप्त नर्तकी की मूर्ति अपने-आप में एक अद्वितीय रचना है। प्रसिद्ध इतिहसकारों ने इसे संसार की तत्कालीन सभ्यताओं की सर्वश्रेष्ठ रचना माना है और कहा है कि इससे उत्तम और कुछ हो ही नहीं सकता।	

अंक योजना प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-2

हिंदी - केन्द्रिक

कक्षा - बारहवीं

समय: 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

प्र.सं.		उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
		खंड-क	
प्र.1	(क)	मनमोहिनी प्रकृति की गोद में भारत देश बसा हुआ है, यहाँ भारतवासियों को स्वर्ग के समान सुख की प्राप्ति होती है।	1
	(ख)	भारत की नदियों की विशेषता है कि इनका जल अमृतमयी है। अर्थात् भाारत की नदियों में जल के रूप में सुधा की धारा बहती है।	1
	(ग)	भारत के फूल बहुत ही प्यारे है, सुन्दर हैं तथा ये दिन-रात हँसते रहते हैं।	1
	(घ)	जगदीश का दुलारा देश भारत सबसे पहले इस संसार में सभ्य होने के कारण तथा यशस्वी बनने के कारण संसार का शिरोमणि देश है।	1
	(ङ)	शीर्षक : मनमोहिनी प्रकृति/प्रकृति की गोद में बसा भारत देश/संसार का शिरोमणि देश।	1
प्र.2	(क)	भारत एक स्वतंत्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी तथा भाषा-भाषी लोग रहते हैं। एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिह्न तथा एक संविधान मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं।	1
	(ख)	हमारा देश जब अंग्रेजों के आधीन था। तब प्रत्येक भाषा-भाषी तथा धर्म का अवलम्बन करने वाले न देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न किया था। उन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया था। इसी परिणामस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्र हुआ था।	1
	(ग)	भारत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता अनेकता में एकता है। भारत में विभिन्न धर्म, जाति तथा समुदाय के लोग रहते हैं। इन सभी लोगों की बोली तथा भाषा भी भिन्न है। यहाँ पर कहीं उपजाऊ भूमि है तो कहीं रेगिस्तान, कहीं ऊँचे-2 पहाड़ हैं तो कहीं समतल मैदान।	1
	(घ)	आधुनिक काल में द्रुतगामी यातायात बन गए हैं जिसके कारण हम एक भाग से दूसरे भाग में शीघ्र ही पहुँच सकते हैं। इसी कारण देश की भौगोलिक सीमा सिकुड़ गई प्रतीत होती है।	1
	(ङ)	सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण देश में एक अद्भुत समानता दिखाई पड़ती है। सारे देश में विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर हैं। इन सब में प्राय: एक-सी पूजा पद्धति चलती है। लोग व्रत-त्यौहारों को मानते हैं। वेद, रामायण, गीत, आदि ग्रंथों के अनुष्ठान होते हैं। इस्लाम तथा	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	ईसाइ धर्म में भी ऐसी समानताएँ दिखाई पड़ती हैं। इसी कारण सारा देश एक सूत्र में बँधा हुआ है।	
	(च) भारतीय संस्कृति में ढले प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान है। इस पहचान के कारण इस देश के लोग एक दूसरे से अपना अलग अस्तित्व रखते हैं। विभिन्न प्रकार का रहन-सहन तथा पहनावा, यह सांस्कृतिक एकता इस देश की वह शक्ति है जिससे इतना बड़ा देश एक सूत्र में बँधा हुआ है। यही अनेकता में एकता है। सभी भारतीय इस पर गर्व करते हैं।	2
	(द) महात्मा गाँधी का समूचा जीवन राष्ट्रीय एकता से ओत-प्रोत एक ज्वलन्त उदाहरण था। उनके बलिदान एक एकमात्र आधार राष्ट्रीय एकता ही था।	1
	(ज) समस्त महामानवों, नेताओं, राजनीति के पंडितों तथा महान् साहित्यकारों को जनता में भारतीयता कूट-कूटकर भरनी चाहिए। यही प्रयत्न राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा।	1
	(झ) यदि प्रत्येक भारतीय संकीर्ण विचारधारा का परित्याग कर व्यापक दृष्टिकोण अपना ले तभी हमारी राष्ट्रीय एकता अक्षुण्ण बनी रह सकती है। यह आज की एक महत्वपूर्ण अपेक्षा है।	
	(ञ) 'ता्' - स्वाधीनता, विविधता	
	(त) सांस्कृतिक - वास्तव में सांस्कृतिक एकता ने ही भारत को एक सूत्र में बाँधा हुआ है।	
	(थ) आधुनिक - पुरातन अपेक्षा - उपेक्षा	
	(द) 'राष्ट्रीय एकता'	
	खंड-ख	
प्र.3	**किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित है -**	**5**
	(क) भूमिका और उपसंहार	2
	(ख) विषय वस्तु (कम से कम तीन प्रमुख बिन्दुओं पर विमर्श)	2
	(ग) भाषा की शुद्धता एवं समग्र भाव	1
प्र.4	**पत्र-लेखन किसी एक विषय पर अपेक्षित है -**	**5**
	(क) प्रारंभ एवं समापन	2
	(ख) प्रभावी प्रस्तुति	2
	(ग) उपयुक्त भाषा	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.5	**(अ)**	
	(क) उल्टा पिरामिड-शैली में पहले इंट्रो, मध्य में बोडी तथा अंत में समाचार होता है।	1
	(ख) पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' का अर्थ है - लेखन व रिपोर्टिंग का विशेष क्षेत्र।	1
	(ग) लोगों की जिज्ञासा की भावना ही पत्रकारिता का मूल तत्व है। अर्थात् जिज्ञासा का पता-पल बलवती होना ही मूल तत्व है।	1
	(घ) फीचर एक सृजनात्मक, सुव्यवस्थित तथा आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को जानकारी देने के साथ मनोरंजन व शिक्षित कराना होता है। जबकि समाचार में पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत कराया जाता है।	1
	(ङ) छह प्रकार हैं - क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे।	1
	(आ) (क) घटना का तश्यपटन वर्ण	5
	(ख) निष्पक्ष रिपोर्ट	
	(ग) उपसंहार	
प्र.6	**फीचर-लेखन**	**5**
	(क) प्रारंभ और समापन	2
	(ख) प्रभावी प्रस्तुति	2
	(ग) उपयुक्त भाषा	1
	खंड-ग	
प्र.7	किसी एक गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए (2x4)	**8**
	(क) आत्म परिचय - कविता हरिवंशराय बच्चन - कवि	2
	(ख) अपने हृदय के उद्‌गारों (विचारों) को लेकर घूम रहा हूँ और मन के उपहार लिए घूम रहा है।	2
	(ग) कवि के अनुसार संसार अपूर्ण है, अधूरा है अतः वह संसार के साथ घुलमिल नहीं पाता। उसें संसार बहुत ही झूठा व बनावटी लगता है।	2
	(घ) संसार के कष्टों को सहते हुए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि रोकर सहें या हँसकर, कष्ट तो सहने ही है फिर क्यों न हँसते हुए जीवन बिताएँ।	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	अथवा	
	(क) कवि–श्री कुँवर नारायण कविता–कविता के बहाने	
	(ख) कविता के संबंध में उड़ने का अर्थ है–कल्पना की उड़ान अर्थात् सोच की उड़ान, विचारों की उड़ान ही कविता है। 'खिलने' शब्द को कविता के अर्थ में विकास से जोड़ा जाएगा। कविता विचारों और भावों की परिपक्वता का नाम है। जब हमारे विचार विकास पाते है, भावनाओं का ज्वार संयत हो जाता है, तब कविता रची जाती है। यही कविता में विकास का अर्थ है।	
	(ग) जिस प्रकार बच्चे के सपने असीम हैं, बच्चों के खेल का कोई अंत नहीं है, बच्चे की प्रतिभा, बच्चे में छिपी संभावना का कोई अंत नहीं हैं; वैसे ही कविता की कल्पनाएँ असीम हैं, कविता के खेल यानि कविता में किए जाने वाले प्रयोग असीम है। कविता प्रकृति, मनुष्य, जीव, निर्जीव, काल, इतिहास, भावी जीवन अनेक विषयों पर लिखी जा सकती है अर्थात् इसके खेल भी असीम है। कविता में भावों और रचनात्मकता का गुण वैसे ही जान फूँक देता है, जैसे बच्चे में कभी न थकने वाला, सदा कुछ–न कुछ करने वाला तत्व विद्यमान होता है।	
	(घ) एक पुष्प खिलता है, महकता है, अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, लेकिन एक निश्चित समय के बाद उसकी आयु समाप्त हो जाती है, वह मुरझा जाता है। कविता में जो भाव और विचार हैं, वे सदा–सर्वदा यथावत बने रहते हैं। उनके मुरझाने की कोई समय सीमा नहीं होती। जैसे 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता पचास वर्ष पूर्व लिखी गई थी, मगर आज भी वह उसी भाव की व्यंजना करती है।	
प्र.8	**किसी एक काव्यंश के उत्तर अपेक्षित हैं -**	**6**
	(क) इस समाज में जितने भी प्रकार के काम हैं, वह सभी पेट की आग वशीभूत होकर किए जाते हैं। 'पेट की आग' विवेक नष्ट करने वाली है। ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त कोई इस पर नियंत्रण नहीं पा सकता।	2
	(ख) पेट की आग भगवान राम की कृपा के बिना नहीं बुझ सकती है। अर्थात् राम की कृपा ही वह जल है, जिससे इस आग का शमन हो सकता है।	2
	(ग) अर्थात् सभी पेट का गुण पढ़कर काम करते हैं, सभी पेट की भूख मिटाने के लिए काम करते हैं।	2
	अथवा	
	(क) राम भक्त हनुमान की बहादुरी व कर्मठता का वर्णन है तथा साथ ही अहंकारी रावण की	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	हताशा व दुख का वर्णन किया है।	
	(ख) हनुमान जी की वीरता और कर्मनिष्ठा ऐसी है कि वे दुख में व्याकुल नहीं होते और हर्ष में कर्तव्य नहीं भूलते, बैठर रोने के स्थान पर संजीवनी लाए और काम होते ही वैद्य को यथास्थान पहुँचाया। सत्य के पक्ष में जो कुछ भी होता है, वह असत्य के लिए कष्ट का कारण बनता है। राम का हर्ष ही रावण का शोक है।	
	(ग) लंबे समय से सोए हुए भाई को रावण अपने दुख और अहंकार से अवगत करवा रहा है। इससे ज्ञात होता है। कि अहंकारी को सदैव नीचा ही देखना पड़ता है।	
प्र.9	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -** (3x2)	**6**
	(क) किशोर और युवा अवस्था' एक ऐसी अवस्था है। जिसमें क्षमता और इच्छाशक्ति उफ़ान पर होती है। ये स्वयं अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसको पाने की हर संभव कोशिश करते है। इनकी नन्हीं आँखों में दूर गगन की ऊँचाइयों को पाने के सपने होते हैं। डॉ०ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का कहना है-'वे बच्चों की आँखों में महाशक्ति भारत की नींव देखते हैं'। अत: हमें बच्चों से सलाह लेनी चाहिए, उनकी इच्छा से, उनकी क्षमता से लाभ उठाना चाहिए। बच्चे हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं। देश की बागडोर भी बच्चों के हाथों में (युवा वर्ग) आ जाए, तो अनेक समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी।	3
	(ख) प्रस्तुत कविता का शीर्षक अपने-आप में कविता के सारांश को समेटे हुए है। शीर्षक पढ़कर लगता है मानो किसी पशु को पिंजरे में बंद करके रखा गया है और दर्शक उसे और उसकी गतिविधियाँ देखकर मनोरंजन करते रहे हैं। ठीक उसी भाव से यहाँ एक अपाहिज की किसी भी भाव अथवा मानवीय संवेदना का ध्यान किए बिना उसे एक मनोरंजक कार्यक्रम की भाँति प्रस्तुत किया जा रहा है। अत: 'कैमरे में बंद अपाहिज' एक सार्थक शीर्षक है।	3
	(ग) 'कागज़ का एक पन्ना' और 'खेत' दोनों ही सृजन की भूमि हैं। इन दोनों के बिना कविता और कृषि-दोनों कर्म नहीं हो सकते। पन्ना कविता की सृजन भूमि और भावों-विचारों की अभिव्यक्ति का आधार है। कागज़ के बगैर शब्दों का लेखन ही संभव नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार खेत के अभाव में बीज का रोपण भी संभव नहीं, अत: अंकुरण और पौधे का विकास, फल-फूल आदि भी नहीं हो सकेंगे। जैसे कृषक दिन-रात एक करके फसल तैयार करता है, उसी प्रकार कवि का कर्म भी कोई आसान काम नहीं, वह भी कृषक की भाँति दिन-रात एक करके काव्य रचना करता है।	3
प्र.10	(क) प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है। इसे 'महादेवी वर्मा जी' ने लिखा है।	
	(ख) भक्तिन के पिता उसे अगाध प्रेम करते थे। इसी कारण विमाता ईर्ष्या करती थी। उसे यह डर था कि भक्तिन आई तो कहीं उसके पिता अपनी संपत्ति उसके नाम न कर दें। इसी भय और द्वेष के कारण विमाता ने उसे पिता की बीमारी की सूचना नहीं दी।	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ग) लछमिन की सास ने सोचा कि पिता की लाड़ली लछमिन बहुत रोना-धोना मचाएगी, इससे घर में अपशगुन का बखेड़ा फैलेगा। इसी झंझट से बचने के लिए उसने लछमिन को पिता की मृत्यु की सूचना नहीं दी।	
	(घ) लछमिन तो उत्साह से भर कर पिता के घर आई थी। स्नेही पिता से मिलने की खुशी से उसका मन प्रफुल्लित था। लेकिन जैसे ही उसने जाना कि पिता की मृत्यु भी हो चुकी और उसे सूचित भी नहीं किया गया, अन्यथा बीमार पिता से मिल तो लेती; विमाता की सारी चाल समझते ही दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई लछमिन पानी भी बिना पिए ही लौट गई।	
	अथवा	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश श्री जैनेंद्र ने लिखा है, इसे 'बाज़ार दर्शन' पाठ से लिया गया है।	
	(ख) गद्यांश के आरंभ में बाज़ार ग्राहक से कह रहा है कि आओ मुझे लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ।	
	(ग) चाह का अर्थ है इच्छा, जो बाज़ार के मूक आमंत्रण से हमें अपनी ओर आकर्षित करती है और हम भीतर महसूस करके सोचते हैं कि आह! कितना अधिक है और मेरे यहाँ कितना कम है। इसलिए चाह अर्थात् अभाव।	
	(घ) बाज़ार का चौक हमें विकल, पागल कर सकता है। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल मनुष्य को सदा के लिए बेकार कर देता है।	
प्र.11	**कोई चार उत्तर अपेक्षित है -**	
	(क) गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी से भुन-भुन कर त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख-सूख कर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़ कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देनेवाली लू चलती थी। ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा पाठ में लगे थे। अंत में इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।	3
	(ख) लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मँजे हुए पहलवान को ललकार बैठा, तो सारा जन समूह, राजा और पहलवानों का समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज़्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह न थी। हाँ, ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने 'शेर के बच्चे' को खूब धोया, उठा-उठा कर पटका और हरा दिया। जीत के लिए सारी दुनिया विरोध में और मात्र ढोल ही उसके साथ	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	था। अतः जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा, उसे प्रणाम किया।	
	(ग) चार्ली की फ़िल्में बच्चे-बूढ़े, जवान, वयस्कों सभी में समान रूप से लोकप्रिय हैं। यह चैप्लिन का चमत्कार ही है कि उनकी फ़िल्मों को पागलखाने के मरीज़ों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइंस्टाइन जैसे महान प्रतिभावाले व्यक्ति तक एक स्तर पर कहीं अधिक सूक्ष्म रसास्वाद के साथ देख सकते हैं। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि हर वर्ग में लोकप्रिय इस कलाकार ने फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया और दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण व्यवस्था को तोड़ा। कहीं-कहीं तो भौगोलिक सीमा, भाषा आदि के बंधनों को भी पार करने के कारण इन्हें सार्वभौमिक कलाकार कहा गया है।	3
	(घ) जब सफ़िया ने सिख बीबी को देखा, तो वह हैरान रह गई। बीबी का वही चेहरा था, जैसा सफ़िया की माँ का था। बिलकुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीबी ने वैसी ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीबी की तरफ बार-बार बड़े प्यार से देखने लगी उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, पर यह कौन? उसकी माँ जैसी है, इतनी समानता कैसे है? यही सोचकर सफ़िया उनके प्रति आकर्षित हुई।	3
	(ङ) शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की याद आती है। शिरीष तरु अवधूत है, क्योंकि वह बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित होता रहता है। इसी प्रकार महात्मा गाँधी भी मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर के बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे। इस समानता के कारण लेखक की गांधी जी की याद आ जाती है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्म बल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज़ है। आत्मा की शक्ति है। जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सका है, वैसे ही महात्मा गाँधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्ववाले थे। यह वृक्ष और वह मनुष्य दोनों ही अवधूत हैं।	3
प्र.12	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) यशोधर बाबू डेमोक्रेट बाबू थे। वे हरगिज़ यह दुराग्रह नहीं करना चाहते थे कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर मानें। अतः बच्चों को अपनी इच्छा से काम करने की पूरी आज़ादी थी। यशोधर बाबू तो यह भी मानते थे कि आज बच्चों को उनसे कहीं ज़्यादा ज्ञान है। मगर एक्सपीरिएंस का कोई सब्सटीट्यूट नहीं होता। अतः वे सिर्फ इतना भर चाहते थे कि बच्चे जो कुछ भी करें, उनसे पूछ ज़रूर लें। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि वे स्वयं चाहे जितने पुराणपंथी थे, बच्चों को स्वतंत्र जीवन जीने देते थे।	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ख) लेखक पढ़ना चाहता था और उसके पिता उसे पढ़ाने के बजाए उससे खेत का काम, पशु चराने का काम कराना चाहते थे। पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी। इसी बात से लेखक बहुत ही परेशान रहता था। उसका मन दिन-रात अपनी पढ़ाई जारी रखने की योजनाएँ बनाता रहता था। इसी योजना के अनुसार लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने की बात कही। माँ ने लेखक का साथ देने की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया। अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लेखक के मन् की पीड़ा को समझाती थी।	3
	(ग) ऐन की डायरी किशोर मन की ईमानदार अभिव्यक्ति है। इससे पता लगता है कि किशोरों को अपनी चिट्ठियों और उपहारों से अधिक लगाव होता है। वे जो कुछ भी करना चाहते हैं उसे बड़े लोग नकारते रहते हैं, जैसे ऐन का केश-विन्यास जो फिल्मी सितारों की नकल करके करके बनाया जाता था। इस अवस्था में बड़ों द्वारा बात-बात पर कमी निकाली जाती है या किशोरों को टोका जाता है। यह बात किशोरों को बहुत ही नागवार गुज़रती है। किशोर बड़ों की अपेक्षा अधिक ईमानदारी से जीते हैं। इन्हें जीने के लिए सुंदर, स्वस्थ वातावरण चाहिए। किशोरावस्था में ऐन की भांति हम सभी अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।	
प्र.13	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) सिंधु-सभ्यता के शहर मोहनजोदड़ों की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न भंडारण व्यवस्था, जल निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धिमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुतः इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवतः वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।	2
	(ख) इस कहानी में 'पीढ़ी का अंतराल' सबसे प्रमुख है। यही मूल संवेदना है क्योंकि कहानी में प्रत्येक कठिनाई इसलिए आ रही है कि यशोधर बाबू अपने पुराने संस्कारों, नियमों व कायदों से बंधे रहना चाहते हैं और उनका परिवार, उनके बच्चे वर्तमान में जी रहे हैं जो ऐसा कुछ गलत भी नहीं है। यदि यशोधर बाबू थोड़े-से लचीले स्वभाव के हो जाते, तो उन्हें बहुत सुख मिलता और जीवन भी खुशी से व्यतीत करते।	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ग) जब लेखक को वसंत पाटिल के साथ दूसरे लड़कों के सवाल जाँचने का काम मिला, तब उसकी वसंत से दोस्ती हो गई। अब ये दोनों एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम निपटाने लगे। सभी अध्यापक लेखक को 'आनंदा' कहकर बुलाने लगे। यह संबोधन भी उसके लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण था। मानो पाठशाला में आने के कारण ही उसे स्वयं का नाम सुनने को मिला। 'आनंदा' की कोई पहचान बनी। एक तो वसंत की दोस्ती, दूसरा अध्यापकों का व्यवहार - इस कारण लेखक का अपनी पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा।	
प्र.14.	**कोई एक उत्तर अपेक्षित है -**	**5**
	(क) 'अतीत में दबे पाँव' लेखक के वे अनुभव हैं, जो उन्हें सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में अतीत अर्थात् भूतकाल में बसे सुंदर सुनियोजित नगर में प्रवेशकर लेखक वहाँ की एक-एक चीज़ से अपना परिचय बढ़ाता है, उस सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। वहाँ की एक-एक स्थूल चीज़ से मुखातिब होता हुआ लेखक चकित रह जाता है। वे लोग कैसे रहते थे? यह अनुमान आश्चर्यजनक था। वहाँ की सड़कें, नालियाँ, स्तूप, सभागार, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, कुएँ, कुंड और अनुष्ठान गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर लेखक महसूस करता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ हैं। उसे सड़क पर जाती हुई बैलगाड़ी से रुनझुन की ध्वनि सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए उसे अतीत के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोई घर की खिड़की से झाँकने पर उसे वहाँ पक रहे भोजन की गंध भी आती है। यदि इन लोगों की सभ्यता नष्ट न हुई होती तो ये पाँव प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ रहे होते और आज भारतीय उपमहाद्वीप महाशक्ति बन चुका होता। मगर दुर्भाग्य से ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोजित पाँव अतीत में ही दबकर रह गए। इसलिए 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक और सटीक है।	
	(ख) 'ऐन फ्रैंक की प्रतिभा और धैर्य का परिचय हमें उसकी डायरी से मिलता है। उसमें किशोरावस्था का उखड़ापन कम और सहज शालीनता अधिक थी। उसकी अवस्था में अन्य कोई भी होता तो विचलित एवं बेचैनी का आभास देता। ऐन ने अपने स्वभाव और अवस्था पर नियंत्रण पा लिया था। वह एक सकारात्मक, परिपक्व और सुलझी हुई सोच के साथ आगे बढ़ रही थी। उसमें कमाल की सहन शक्ति थी। अनेक बातें जो उसे बुरी लगती थीं, उन्हें वह शालीन चुप्पी के साथ बड़ों का सम्मान करने के लिए सहन कर जाती थी। पीटर के प्रति अपने अंतरंग भावों को भी वह सहेज कर केवल डायरी में व्यक्त करती थी। अपनी इन भावनाओं को वह किशोरावस्था में भी जिस मानसिक स्तर से सोचती थी वह वास्तव में सराहनीय है। परिवपक्व सोच का ही परिणाम था कि वह अपने मन के भाव, उद्‌गार, विचार आदि डायरी में ही व्यक्त करती थी। यदि ऐन में ऐसी सधी हुई परिपक्वता न होती तो हमें युद्‌ध काल की ऐसी दर्द भरी दास्तान पढ़ने को नहीं मिल सकती थी।	